विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु संदर्भित राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नव निकष

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संचेतना
और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

₹ 20
सितम्बर 2018, भाद्रपद-आश्विन वि. संवत 2075

खून क्यों सफेद हो गया?
भेद में अभेद खो गया
बँट गये शहीद,
गीत कट गए,
कलेजे में कटार गड़ गई
दूध में दरार पड़ गई
खेतों में बारूदी गंध,
टूट गये नानक के छंद
सतलुज सहम उठी,
व्यथित सी बितस्ता है
वसंत से बहार झड़ गई
दूध में दरार पड़ गई
अपनी ही छाया से बैर,
गले लगने लगे हैं गैर,
खुदकुशी का रास्ता,
तुम्हें वतन का वास्ता
बात बनाएँ, बिगड़ गई
दूध में दरार पड़ गई

Scanned with CamScanner

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु अधिकृत राष्ट्रीय शोध पत्रिका
आई.एस.एस.एन-०६७५-०८२७

नव निकष

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संचेतना
और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

वर्ष-१२, अंक-३, सितम्बर २०१८ भाद्रपद-आश्विन वि.संवत् २०७५

४ आत्मनेपद - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

कसौटी पर किरदार

६ इक शख़्स सारे देश को वीरान कर गया - अशोक पाण्डेय

साहित्य चिंतन

८ नई कविता में रामकथा विषयक कविताएँ - डॉ. रमेश चन्द्र शुक्ल
१६ हिन्दी ग़ज़ल का सूक्ष्म सिंहावलोकन - हरीलाल 'मिलन'
२२ गैर दलित लेखन में दलित प्रेमचन्द के पात्र - डॉ. किरण शर्मा
२६ नवजीवन से दूर होती नवगीत विधा - अनिल कुमार पाण्डेय

शोध लेख

३२ मंजुला चौहान के कथा साहित्य में जीवन - प्रो. विद्या एस. हिरेमठ
३५ बौद्ध धर्म और डॉ. आंबेडकर - झाला भारती आर.
३७ ईरान क्रांति : तबाही और तनहाई का तोहफा - डॉ. सुप्रिया पी.
४१ पं. बंशीधर शुक्ल के अवधी काव्य में लोक संस्कृति - डॉ. प्रियोतिमा मिश्रा
४३ बाजारवाद : एक विवेचना - श्वेता कुमारी सिंह
४७ जगदीश गुप्त कृत 'युग्म' महाकाव्य का शिल्पविधान - डॉ. सुषमा त्रिवेदी
५० नरेन्द्र कोहली के उपन्यास में समाज दर्शन - डॉ. रावेन्द्र कुमार शुक्ल

कहानी

५३ लोहे की जालियाँ - राम नगीना मौर्य

लघु कथा

४० पाप और पुण्य - डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय
४२ ज़हर - डॉ. लता कादम्बरी

कविताएं

१५ वो तो माँ है मेरी - डॉ. प्रतिभा 'माही'
२१ दो ग़ज़लें - अनिता
३१ मेघ यूं रुठो न हमसे - शीतल
३४ मेरे गांव तुम क्यों शहर बन गये - वीरभद्र कार्कीढोली
४६ मेहनत - कृष्ण कुमार सैनी 'राज'
४६ मिथिला - रामधारी सिंह 'दिनकर'
५८ संकल्प का इतिहास दोहराया - डॉ. बालगोबिन्द द्विवेदी

५६ पुस्तक समीक्षा

६२ परस्मैपद

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं। सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

Scanned with CamScanner

शोध लेख

ईरान क्रांति तबाही और तनहाई का तोहफा

● डॉ. सुप्रिया पी.

अयातुल्ला खुमैनी के शासन में ईरान में काफी बदलाव आए। साहित्य को काफी प्रोत्साहन मिला। दुनिया-भर के क्रांति और साम्यवादी विचारधारा के साहित्य ईरानी बाजारों में पहुँचे। हर मुहल्ले में स्वतंत्र वार्तालाप का आयोजन हुआ। विदेश में बसे लेखक, बुद्धिजीवी देश लौटकर आजाद ईरान में साँस लेने लगे। फिर धीरे-धीरे बदलाव होने लगे। महँगाई और बेकारी बढ़ती गई। ईरान-इराक सीमा पर तनाव बढ़ने लगा।

नासिरा शर्मा ने अपनी १९७६-८० के बीच ईरान यात्रा के अनुभव के आधार पर पहले भी कई बार बेबाक तरीके से कहानियाँ और उपन्यास लिखें हैं। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' १९८४ ई. में प्रकाशित हुआ। आधुनिक ईरान की पृष्ठभूमि में अयातुल्ला खुमैनी की रक्तरंजित इस्लामी क्रान्ति का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। ईरान के राजनीतिक-सांस्कृतिक संकट को लेखिका ने एक मानवीय संकट के रूप में देखा है। ईरान-इराक युद्ध के अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और धार्मिक उन्माद के विरुद्ध आवाज उठाकर नासिरा शर्मा ने युद्ध के अमानवीय पहलुओं को संवेदनात्मक स्तर पर उजागर किया है।

तयब्बा इस उपन्यास की ईरानी पात्र है। वह तेहरान विश्वविद्यालय की छात्रा है। ईरान में शाही व्यवस्था के बिखराव और अयातुल्ला खुमैनी के शासन को तय्यबा ने अनुभव किया था। शाही व्यवस्था के विरोध में पूरी ईरानी जनता निकल पड़ती है। शाह के चित्र सड़कों पर जलाए जाते हैं। सारा दिन, सारी रात-कभी बम फटता, कभी गोली चलती, कभी नारे लगते, कभी शाही तस्वीरों की होली जलाई जाती। हर ऑफिस, हर फर्म में हड़ताल शुरू हो गई। सिनेमा हाल जले, बैंक लुटे, दुकानें बेनूर, सब कुछ बदल रहा था। औरतें अपनी बँधी मुट्ठी लिये सड़क पर निकलीं तो उनके पीछे उनके पति और बच्चे थे। औरतें सेक्स और खुलेपन के नंगे नाच से तंग आ गयी थीं। वे व्यवस्था में अपने लिए ठोस धरती और विश्वास चाहती थीं। अमेरिकी अपना घर और कंपनियाँ बंद कर भाग रहे थे। पूरी जनता अयातुल्ला खुमैनी को अपना शासक बनाना चाहती थी ।

अयातुल्ला खुमैनी के शासन में ईरान में काफी बदलाव आए। साहित्य को काफी प्रोत्साहन मिला। दुनिया-भर के क्रांति और साम्यवादी विचारधारा के साहित्य ईरानी बाजारों में पहुँचे। हर मुहल्ले में स्वतंत्र वार्तालाप का आयोजन हुआ। विदेश में बसे लेखक, बुद्धिजीवी देश लौटकर आजाद ईरान में साँस लेने लगे। फिर धीरे-धीरे बदलाव होने लगे। महँगाई और बेकारी बढ़ती गई। ईरान-इराक सीमा पर तनाव बढ़ने लगा। विश्व-स्तर पर दोनों महान शक्तियाँ-सोवियत संघ और ग्रेट ब्रिटेन ईरान में अपने-अपने तरीके से पैर जमाने की कोशिशों में लगी हुई थीं। मुजाहिदीन और हिज्बुल्लाही में तनाव बढ़ने लगा।

तय्यबा को भाग्य या धर्म से कोई लगाव नहीं है। अपने हाथ की रेखाओं को वह भाग्य की रेखा नहीं मानती। वह रेखाएँ उसके लिए ईरान का मानचित्र हैं जिसमें ईरान के पहाड़, नदियाँ, मैदान, विश्वविद्यालय, कारावास और उसका अपना घर है, जिसे उसे सँवारना है। अपने भाग्य की भाषा अनजान मानती तय्यबा कहती है 'मेरा भाग्य मेरा कर्म है।' तय्यबा आजादी के संघर्ष में जी-जान से जुड़ती है। क्रांतिकारी बनकर वह विवाह न करने का प्रण करती है। तन की भूख को विचार और वतन पर कुरबान कर देती है। अपने मुल्क की आजादी का सपना लिए तय्यबा कहती है "मन की इच्छा है आजादी को देखने के बाद मरने की, आगे इस लालसा को पूरी होने तक कितनी बाधाएँ पार करनी हैं, मालूम नहीं।"

तय्यबा प्रेम और विवाह के प्रति उदासीन है। वह यह मानती है कि इश्क यदि सब कुछ होता तो रोज होती घटनाएँ, तलाक, कत्ल, धोखा, बेवफाई, आत्महत्या कुछ नहीं होती। तय्यबा के लिए इश्क एक तयशुदा अनुबंधन है जो कुछ समय तक ही रहता है। विवाह के रस्म को वह अभिशाप मानती है। वह कहती है

Scanned with CamScanner